कपास समाचार

केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान नागपुर

खंड : 29, नं. 3 | जुलाई से दिसंबर 2012

भारत – अफ्रिकन प्रशिक्षण कार्यक्रम ''आधुनिक कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी – मूल्य श्रृँखला का संर्वान''–सीआईसीआर, नागपुर में

डॉ. पी. के. चक्रबर्ती, प्रभारी निदेशक बैठक को संबोधित करेते हुए।

आधुनिक कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी – मूल्य श्रृँखला का संवर्धन'' शीर्षक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान केन्द्र, नागपुर में 22, अक्तूबर से 3, नवंबर, 2012 तक आयोजित किया गया जिसमें छः अफ्रीकी देशों जिसमें सी–4 देश (बेनिन, बुरकीना फासो एवं चाड़) नाईजीरिया, यूगांडा व मलावी भी सम्मिलित है, के 32 विदेशी प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। अफ्रीका के साथ आई एल व एफ एस समूह के लिये कपास प्रौद्योगिकी सहायता कार्यक्रम, नई दिल्ली प्रकल्प कार्यान्वयन संस्था के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय क्षमता निर्माण के उद्देष्य से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ माननीय वाजिज्य, उद्योग व वस्त्र, मंत्री भारत सरकार द्वारा 17, मार्च, 2012 को किया गया था। वाणिज्य विभाग द्वारा केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर को कपास उगाने के विशिष्ट गतिविधियों को कार्यान्वित करने वाली संस्था के रूप में चिन्हित किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रमुख उद्देष्य इसमें सम्मिलित हो रहे सहभागियों को वर्तमान में कपास उत्पादन के क्षेत्रों में विकास एवं सुरक्षा प्रौद्योगिकी के प्रति जागृत करना एवं सहभागियों को प्रौद्योगिकी के अनुभव के

समापन समारोह के दौरान प्रकाशनों का विमोचन

विषय से अवगत कराना है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बीज से कपास चुनाई तक की गतिविधियों को पूर्ण रूप में सम्मिलित किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का समारंभ 22, नवंबर, 2012 को डॉ. पी. के. चक्रबर्ती, प्रभारी निदेशक , सीआईसीआर तथा डॉ. मिलन शर्मा, कार्यक्रम प्रबंधक, आई एल व एफ एस समूह, नई दिल्ली के शुभ कर कमलो से हुआ। अपने उद्घाटन संबोधन में डॉ. पी. के. चक्रबर्ती, प्रभारी निदेशक ने कहा कि भारत तथा इन छः अफ्रीकन देशों में जलवायु परिस्थितियों में अनेक समानतायें हैं। अतः भारतीय प्रौद्योगिकी अफ्रीकी देषों में भी सुयोग्य रहेगी ऐसी उम्मीद है। इस (टीएपी) तकनीकी विकास कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. डी. ब्लेज डिसूजा ने सहभागियों का स्वागत किया तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम के रूप रेखा से अवगत करवाया। डॉ. मिलन शर्मा, प्रमुख अतिथि ने अपने वक्तव्य में कहा कि इस कार्यक्रम की रूप रेखा को इन सभी देशों की आवश्यकता को सामने रखकर बनाया गया है।

विशय वस्तु	
महानिदेाक, भा. कृ. अनु. परिशद का सीआईसीआर दौरा	2
भा. कृ. अनु. परिशद क्षेत्रीय समिति बैठक	3
राश्ट्रीय संगोश्ठी	3
अन्य प्रक्षिण कार्यक्रम	4
क्यू आरटी बैठक	5
कृ. वि. केन्द्र परिदृय	6
अनुसंधान उपलब्धियाँ	8
आर्थिक पुनरावलोकन	9
बैठक कार्याालाओं में सहभागिता	9
मानव संसाधन विकास	9
पुरस्कार एवं सम्मान	10
हिन्दी सप्ताह समारोह	11
प्रकाान	12

महामहीम विशेष राजदूत, बुरकीना फासो दूतावास, सहभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए।

इस कार्यक्रम के समापन समारोह में 3, नवंबर, 2012 को महामहीम श्रीमान इदरिस राऊआ ओयूडीआरएओजीओ, विशेष राजदूत बुरकीनो फासो दूतावास, मुख्य अतिथि थे। डॉ. सी. डी. मायी, पूर्व अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन बोर्ड, नई दिल्ली इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि थे। डॉ. दीपक सरकार, निदेशक, एन बी एस एस एवं एल यू पी, नागपुर तथा डॉ. वी. जे. शिवनकर, निदेषक, एन आर सी सी, नागपुर इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने स्वागत भाषण में डॉ. पी. के. चक्रबर्ती, प्रभारी निदेशक, सीआईसीआर, नागपुर ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिकों के स्तर पर कुशलताओं को उभार कर इन देशों के लिए एक अधिपति प्रशिक्षु बनाना है। डॉ. ब्लेज डिसूसा, टीएपी कार्यक्रम के समन्वयक ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम अफ्रीकी देशों के आवश्यकता के अनुसार बनाया गया है। डॉ. सी. डी. मायी ने इन सात देशों के सरकारों को इन वैज्ञानिकों को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भेजने के लिए धन्यवाद दिया। इन्होंने यह भी कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकि हस्तांतरण में पहला कदम है तथा इस तरह के वैज्ञानिक एवं तकनीकि सहयोग का आदान प्रदान कार्यक्रम विकासशील एवं अफ्रीकी देशों में निरंतर

महामहीम श्रीमान इदरिस राऊआ, ओयूडीआरएओजीओ, विशेष राजदूत, बुरकीना फासो दूतावास ने पावर प्रेजेंटेशन के संकलन का विमोचन किया तथा डॉ. सी. डी. मायी द्वारा तैयार किये गये प्रशिक्षण पुस्तिका का विमोचन किया।

डॉ. चक्रबर्ती, प्रभारी निदेशक एवं डॉ. डी. ब्लेज टीएपी समन्वयक, सहभागियों एवं प्रमुख अतिथि के साथ

प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफलता पूर्वक पूर्ण करने हेतु महामहीम, विशेष राजदूत, बुरकीना फासो दूतावास द्वारा प्रमाणपत्र वितरण किया गया। अपने समापन संबोधन में महामहीम, विशेष राजदूत ने कहा कि सीआईसीआर, नागपुर अनुसंधान के मूलभूत एवं नीतिगत क्षेत्रों में तथा इस देश में कपास उत्पादन के संबंधित समस्याओं के निदान में एक प्रमुख संस्थान के रूप में उभर रहा है। इन्होंने यह भी कहा कि इन दो देशों के बीच की यह अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता काफी लंबे समय तक चलेगी।

डॉ. संध्या क्रांथी, प्रमुख फसल सुरक्षा विभाग ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया तथा श्रीमती मुक्ता चक्रबर्ती, वैज्ञानिक ने कार्यवाही का संचालन किया। डॉ. के. आर. क्रांथी, निदेशक, सीआईसीआर, नागपुर इस पाठ्यक्रम के निदेशक तथा डॉ. ब्लेज डिसूजा, प्रमुख फसल उत्पादन विभाग पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

डीजी, आईसीएआर व डीडीजी (फसल विज्ञान) अन्य अतिथियों के साथ सीआईसीआर प्रयोगिक प्रक्षेत्र में

डॉ. एस. अय्यप्पन, महानिदेषक भा. कृ. अनु. परिशद एवं सचिव डेअर ने 24, नवंबर, 2012 केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर का दौरा किया। इनके साथ डॉ. स्वपन कुमार दत्ता, उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान), डॉ. सी. डी. मायी, क्यूआरटी अध्यक्ष, डॉ. एस. के. चट्टोपाध्याय, निदेशक सीआईआरसीओटी, मुंबई एवं डॉ. दीपक सरकार, निदेशक एनबीएसएस एवं एलयूपी, नागपुर भी उपस्थित थे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने संस्थान के (प्रक्षेत्र/फील्ड) में सूरज कपास के सघन रोपाई प्रक्षेत्र का दौरा किया। विदर्भ क्षेत्र के बारानी अवस्था व कष्ट कुष्य मृदाओं में संसाधन विहीन गरीब किसानों के लिए कपास की वैकल्पिक तकनीकि को लोकप्रिय करने के सीआईसीआर के प्रयासों पर महानिदेषक ने संतोष व्यक्त किया। अन्य मौसम में ईएलएस कपास उगाने के नवोन्वेषी प्रयोग को भी प्रस्तुत किया गया। उपमहानिदेषक महोदय ने कहा कि विकास नियंत्रकों के द्वारा कपास के भौतिक रचना में परिवर्तन करने के स्थान पर कपास की संहत किस्मों के प्रजनन की आवश्यकता को व्यक्त किया। जी. आर्बोरियम प्रजाति सरनम (कोमिला कॉटन) कृषि परिक्षणों के मानकीकरण की सभी ने प्रशंसा की। ई. जी. मजूमदार द्वारा विकसित कपास चुनाई यंत्र के आद्यरूप का प्रक्षेत्र में प्रदर्शन (फील्ड ट्रायल) किया गया। महानिदेषक ने प्रजनकों को उनके प्रयासों हेतु बधाई दी तथा इच्छा व्यक्त की प्रजनक सामग्री को संवर्ध में स्थाई करना आवश्यक हैं। इन्होंने व्यक्तिगत संस्थाओं के साथ वार्ता प्रारंभ करने पर बल दिया जिससे बीटी कपास के पराजीनी किस्मों के उत्पादन में व्यक्तिगत एवं सरकारी क्षेत्रों द्वारा उत्पादन कृषकों के लाभार्थ बढ़ाया जा सके।

इस दल ने वनीय प्रजाति, उद्यान तथा कीट गृह का दौरा किया एवं इसके प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। इसके पश्चात अधिकारियों ने समाचार पत्र एवं दूरदर्शन के प्रतिनिधियों से भी बातचीत की। डीजी ने अस्थाई श्रमिकों के समस्याओं को भी धैर्य पूर्वक सुना।

इस दौरे के दौरान महानिदेषक, भा. कृ. अनु. परिशद आईसीएआर ने हाल में ही बनाये गये प्रशिक्षण भवन तथा उतक संवर्धन प्रयोगशाला का भी उद्घाटन किया। डॉ. डी. ब्लेज, प्रमुख, फसल उत्पादन विभाग, सीआईसीआर तथा डॉ. एस. के. चट्टोपाध्याय, निदेशक, सीआईआरसीओटी, मुंबई ने अफ्रीका के लिए तकनीकि सहायतार्थ कार्यक्रम के लिए आयोजित किये जा रहे गतिविधियों पर प्रस्तुतीकरण किया। अंत में डीजी एवं डीडीजी ने वैज्ञानिकों को संबोधित 12 वीं योजना के अंतर्गत अनुसंधान कार्यक्रम को मजबूती प्रदान करने हेतु सुझाव भी आमंत्रित किया।

आईसीएआर क्षेत्रीय समिति क्रमांक 7 की बैठक

डॉ. अय्यप्पन, महानिदेषक, क्षेत्रीय कमेटी क्रमांक VII (भा.कृ.अनु.परि.) की बैठक को संबोधित करते हुए।

आईसीएआर, क्षेत्रीय समिति क्रमांक टप्प की 22 वीं बैठक का आयोजन 9 से 10, नवंबर, 2012 को अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र, गोवा में किया गया। इस बैठक का आयोजन आईसीएआर अनुसंधान कॉम्पलेक्स, गोवा द्वारा किया गया। इस बैठक का आयोजन डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डी ए आर ई तथा महानिदेशक भा. कृ. अनु. परिशद की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस बैठक का उद्घाटन 9, नवंबर, 2012 को महामहीम, राज्यपाल गोवा, श्री. भारत वीर वांचू द्वारा डॉ. रामकृष्ण कुसमोरिया, माननीय मंत्री कृषक कल्याण तथा कृषि विकास, मध्यप्रदेश की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर क्षेत्र के कृषि एवं पशु विश्वविद्यालयों के नौ कुलपतियों, पाँच डीडीजी एवं आईसीएआर के पाँच एडीजी, सचिव, कृषि आयुक्त एवं राज्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी आईसीएआर समिति व एनजीओ के सदस्य, आईसीएआर संस्थानों के निदेशक, एआईआरसीपी के पीसी, क्षेत्रीय स्टेशनों के प्रमुख, विशिष्ट अतिथि एवं आमंत्रित गण मान्य उपस्थित थे।

उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता सचिव, डेयर व महानिदेशक, आईसीएआर डॉ. एस. अय्यप्पन द्वारा की गयी। डॉ. एन. पी. सिंह, निदेशक आईसीएआर अनुसंधान कॉम्पलेक्स, गोवा तथा अध्यक्ष स्थानीय आयोजन समिति ने आमंत्रितों का स्वागत किया। डॉ. एम. एम. पांडेय, डीडीजी (अभियांत्रिकी) व नोडल अधिकारी, क्षेत्रीय समिति क्रमांक टप्प ने अपने प्रारंभिक अभिभाषण में बैठक के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह बैठक इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां पर इस क्षेत्र से जुड़े हुए सभी महत्वपूर्ण समस्याओं जैसे कृषि, पशुधन एवं मत्स्य क्षेत्र के लिए तुरंत निदान हेतु संशोधन किया जाएगा। इन्होंने यह भी कहा कि यह बैठक एक ऐसा मंच है जहाँ पर क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं हेतु त्वरित निदान एवं अनुशंसा प्राप्त की जा सकती है।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर व डीजी, आईसीएआर, तथा अध्यक्ष क्षेत्रीय समिति ने गर्व व संतुष्टि महसूस की कि देश के कृषि खंड ने कृषि पदार्थों के उपज तथा उत्पादन वृद्धि द्वारा बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है एवं वृहत योगदान भी दिया है। क्षेत्र टप्प के योगदान की प्रशंसा करते हुए डॉ. अय्यप्पन ने सहभागियो को सूचित किया कि इस क्षेत्र ने देश की अन्न उपज में 15.5 प्रतिशत योगदान किया है। इस अवसर पर डॉ. अय्यप्पन ने आईसीएआर द्वारा प्रारंभ किये गये तीन विशिष्ट कार्यक्रम को घोषित किया जिसमें 1) कृषक प्रथम कार्यक्रम 2) विद्यार्थी–तैयार कार्यक्रम एवं 3) कृषि कार्यक्रम में नवयुवकों को बनाए रखना सम्मिलित है। अनेक उपयोगी प्रकाशनों जिसमें बुलेटिन, सीडी, आईसीएआर संस्थान एवं एसएयू द्वारा प्रकाषित पुस्तकों का विमोचन किया गया। डॉ. के. आर. क्रांथी, निदेशक, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान एवं आईसीएआर क्षेत्रीय समिति टप्प के सचिव ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

कपास अनुसंधान के लिए नवीन अभिक्रम पर राष्ट्रीय सम्मेलन

केन्द्रीय कपास अनुसंधान केन्द्र, नागपुर और भारतीय कपास सुधार समिति नागपुर के सहयोग से ''कपास अनुसंधान के लिए नवीन अभिक्रम'' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन नागपुर में 7, सितंबर, 2012 को किया। इस सेगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सी. डी. मायी, पूर्व अध्यक्ष कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, नई दिल्ली एवं अध्यक्ष आईएसीआई ने की । डॉ. अतानु पुरकायस्था आईएएस, संयुक्त सचिव, टीएमसी, भारत सरकार, डॉ. एन. के. कृष्ण कुमार, उप महानिदेशक (बागवानी), आईसीएआर, नई दिल्ली एवं डॉ. एन. गोपालकृष्णन, सहायक महानिदेशक (सीसी), भा. कृ. अनु. परिशद, नई दिल्ली सम्माननीय अतिथि थे। इस अवसर पर आमंत्रित विशेष अतिथि के रूप में डॉ. एस. के चट्टोपाध्याय, निदेशक सिरकाट, मुंबई, डॉ. दीपक सरकार, निदेशक, एन बी एस एस व एल यू पी, नागपुर, डॉ. वी. जे. शिवनकर, निदेशक, एन आर सी सी, नागपुर, डॉ. अनुपम बारीक, अतिरिक्त आयुक्त कृषि भारत सरकार एवं डॉ. जे. सी. भुतड़ा, सह–आयुक्त कृषि, नागपुर विभाग सम्मिलित थे। डॉ. के. आर. क्रांथी, निदेशक, के. क. अनु. संस्थान तथा अध्यक्ष, आई एस सी आई, नागपुर ने अपने भाषण के प्रारंभ में इस बात पर बल दिया कि इस राष्ट्रीय संगोष्टी का लक्ष्य महत्वपूर्ण अनुसंधान रिक्तता की पहचान करना एवं 12 वीं योजना के कार्यकाल के दौरान उसे सुधारना है। डॉ. एन. गोपालकृष्णन ने अपने संभाषण में कहाँ कि 12 वीं योजना के दौरान अनुसंधान एवं विकास

डॉ. अतानु पुरकायस्था, निदे ाक, सीआईसीआर के साथ कपास सघन रोपण प्रणाली (एचडीपीएस) प्रक्षेत्र में

कार्यक्रम ज्ञान आधारित प्रौद्योगिकी पर केन्द्रित रहेंगे न कि पारंपारिक लागत पर जो कि एक परिवर्तन है, इन्होंने यह भी आशा जाहिर की, कपास पर तकनीकी मिशन का अगला दौर अनुसंधान उपलब्धियों पर समेकित रहेगा। डॉ. एन. कृष्णकुमार, डीडीजी, (उद्यानिकी) ने यह आशा व्यक्त की, कि कपास सें संबंधित नए अनुसंधान गतिविधियो का क्षेत्र कपास के अलावा अन्य क्षेत्रों को भी सम्मिलित करेगा जिससे इसकी व्यापकता व लाभ अन्य क्षेत्रों को भी उपलब्ध रहेगा। इन्होंने विषाणु वेक्टर की गतिकी पर सघन अनुसंधान पर बल दिया। डॉ. अतानु पुरकायस्त, आईएएस ने अभिव्यक्त किया कि नई प्रौद्योगिकियों का सही तरह से मूल्यांकन के पूर्व ही जनता में संवाद हेतु प्रस्तुत कर दिया जाता है। इन्होंने महसूस किया कि जीएम तकनीकी का भविष्य इस पर निर्भर करता है कि हम कितने नीतिसंगत तरीके से अपने बीटी कपास को प्रस्तुत करते हैं और मूल्यांकित करते हैं। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. सी. डी. मायी ने कहा कि हमारी कपास उपज अभी भी स्थिर है जबकि बीटी कपास को वृहत पैमाने पर अपनाया गया है अतः वैज्ञानिकों से निवेदन है कि वे बेहतर प्रबंधन तकनीकि का विकास करें जिससे इस क्रम को बदला जा सके। इनकी राय थी कि छोटे एवं सघन किस्मों के प्रजनन तथा बीटी जीनों को इन किस्मों को जन क्षेत्र में स्थापित करना, अनुसंधान की प्राथमिकता होनी चाहिए। डॉ. सी. डी. मायी के अध्यक्षता वाले तकनीकि सत्र में चार प्रमुख शोध पत्र थे, अर्थात डॉ. एस. के. चट्टोपाध्याय (वस्त्र उद्योग की आवश्यकता के अनुरुप गुणवत्ता और बेहतर किस्मों का उत्पादक्ताओं द्वारा उत्पादन),

डॉ. मायी की अध्यक्षता वाले तकनीकी सत्र में डॉ. क्रांथी का अभिभाषण

डॉ. वी. एन. वाघमारे (चिह्नक सहायित प्रजनन में नये प्रयत्न), डॉ. ओ. एम. बंबावाले (नए आईसीटी युग में तकनीकि का प्रसार) तथा ई. गौतम मजूमदार (स्वदेशी कपास चुनाई यंत्र डिजाईन एवं यंत्रीकरण आवश्यकताए) डॉ. अतानु पुरकायस्त एवं अन्य अतिथियों ने प्रौद्योगिक प्रक्षेत्र तथा अनुसंधान प्रयोगशालों का दौरा किया एवं वैज्ञानिकों के साथ चर्चा की।

डॉ. एन. गोपाकृषणन, उप महानिदेशक (सीसी), आईसीएआर, नई दिल्ली की अध्यक्षता में हुए दूसरे सत्र में डॉ. के. आर. क्रांथी, निदेशक, सीआईसीआर ने 12 वीं योजना के अंतर्गत कपास तकनीकी मिशन में होने वाले अनुसंधान कार्यों की रूप रेखा तथा इनके प्रमुख उद्देश्य व प्राप्तियों को केन्द्रित कर प्रस्तुतिकरण दिया। बनाए गए 12 विशिष्ट प्रकल्पों पर विस्तृत चर्चा की गई तथा एनएआरएस के अंतर्गत प्रमुख भागीदारों (एआईसीसीआईपी, केन्द्रों व आईसीएआर संस्थानों) तथा एनएआरएस से बाहर के भागीदारों की तात्कालिक पहचान की गयी। अध्यक्ष ने अपने टिप्पणी में पूर्व के चर्चा के आधार पर प्रकल्पो के पूलर सूत्रीकरण के तरीकों पर संतुष्टि व्यक्त की। इन्होंने ने विकसित उत्पादों एवं प्रौद्योगिकियों की गहन सामाजिक – आर्थिक संभावनाओं के अध्ययन पर बल दिया तथा यह भी इच्छा व्यक्त कि लक्ष्यों के निर्धारित समय सीमा का अनुपालन तथा कठिन अनुविक्षण होना आवश्यक है। इस संगोष्ठी में 73 प्रतिनिधि थे जिसमें वैज्ञानिक, प्रशासक बीज, कीटनाशक एवं वस्त्र उद्योग के अधिकारी भी सम्मिलित थे।

अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषकों के लिए आरएम पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

टीएमसी एमएम – II –कीटनाशक प्रतिरोधिता प्रबंधन प्रकल्प के अंतर्गत कृषकों की एक बैठक का आयोजन ग्राम वडोक्कीपलयम् पोलाची नार्थ ब्लाक, जिला कोयंबतूर में 25, अगस्त, 2012 किया गया। डॉ. धाराजोथी, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कीट शास्त्र) तथा प्रकल्प के जिला समनव्यक ने कीटनाशक प्रतिरोधिता प्रबंधन (आईआरएम) प्रकल्प के गतिविधियों को समझाया जिसे इस ग्राम में अपनाया गया था तथा कृषकों को स्थाई कपास उत्पादन हेतु इस अवसर को अपनाने का आग्रह किया। इस अवसर पर किसानों के एक प्रशिक्षण व समूह बैठक का आयोजन किया गया। चित्रों, प्रदर्शन, पट्टो तथा कपास के कपास नाशी जीवों, प्राकृतिक शत्रुओं एवं रोगों के जीवित नमूनों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन डॉ. लक्ष्मीराज, सहनिदेशक कृषि, कृषि विभाग, कोयंबतूर द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में इन्होंने कपास उत्पादन के वर्तमान परिदृष्य को प्रस्तुत किया।

ईएलएस कपास कृषि तथा मूल्य संवर्धन पर राष्ट्रीय स्तरीय अभिज्ञा कार्यशाला व प्रशिक्षण कार्यक्रम

एनएआईपी – कपास मूल्य श्रृंखला प्रकल्प द्वारा प्रायोजित एक तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय अभिज्ञा कार्यशाला व प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन, कोयंबतूर मे 26 से 28, दिसंबर, 2012 को आयोजित किया गया। 21 विस्तार अधिकारी/कृषि विभाग के कार्यकर्ता, तमिलनाडू तथा कर्नाटक, एमवाईआरडीए, केवीके, गोपीचेती पलायम, हन्स रोवर केवीके, पेरांबलूर एवं सीमा– एवं सीमा–सी डी आर ए, कोयंबतूर इसमें सम्मिलित हुए।

स्वच्छ कपास उत्पादन पध्दति

एन ए आई पी – कपास मूल्य श्रृंखला प्रकल्प के अप्रकल्प किसानों हेतु एक दिवसीय अभिज्ञा कार्यशाला का आयोजन मामपल्ली, किनायूकडावू, कोयंबतूर में 29, दिसंबर, 2012 में किया गया। एनएआईपी के सफल किसानों के साथ चर्चा का आयोजन किया गया तथा इसके पश्चात एकीकृत कपास उत्पादन तकनीकी अपनाने के परिणामों एवं कपास के लिए विभिन्न मूल्य संवर्धन विधियों को समझाया गया।

क्यूआरटी बैठक का आयोजन

केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के कार्यप्रणाली एवं प्रगति के पुनरावलोकन हेतु आईसीएआर द्वारा गठित पंच वर्षीय पुनरावलोकन दल एवं अखिल भारतीय समन्वित कपास सुधार प्रकल्प (एआईसीसीआईपी) ने सीआईसीआर, नागपुर इसके क्षेत्रीय स्टेशन, कोयंबतूर एवं सिरसा का दौरा किया एवं इन सीनों (एआईसीसीआईपी) ने सीआईसीआर, नागपुर इसके क्षेत्रीय स्टेशन, कोयंबतूर एवं सिरसा का दौरा किया एवं इन स्थानों पर किए गए अनुसंधान कार्यों का पुनरावलोकन किया। सदस्यों ने एआईसीसीआईपी के अनेक केन्द्रों का दौरा किया तथा वैज्ञानिक के साथ चर्चा के पश्चात इन केन्द्रों पर किए गए प्रगति का आकलन किया।

कोयंबतूर के प्रयोगिक प्रक्षेत्र में क्यूआरटी दल

सीआईसीआर, सिरसा के प्रयोगिक प्रक्षेत्र में क्यूआरटी अध्यक्ष एवं सदस्य

सीआईसीआर, नागपुर के प्रायोगिक प्रक्षेत्र में क्यूआरटी सदस्य

सीआईसीआर, नागपुर के प्रौद्योगिक प्रक्षेत्र में क्यूआरटी सदस्य इस दल में डॉ. सी. डी. मायी पूर्व अध्यक्ष, एएसआरबी, क्यूआरटी अध्यक्ष थे, डॉ. एस. एस. मेहेत्रे, पूर्व निदेशक अनुसंधान, महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी, डॉ. (श्रीमती) उषा बरवाले, निदेशक, महीको जीवन विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, जालना, डॉ एच. सी. शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक (कीट शास्त्र) सम शुष्क उष्ण कटिबंधीय के लिए अंर्तराष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (इक्रीसेट) पाटनचेरू, डॉ. डी. पी. बिरादर, कुल सचिव, यूएएस, रायचूर एवं डॉ. डी. के. मारोथिया, अध्यक्ष, राष्ट्रीय पारिस्थितिकीय संस्थान, सदस्य थे। डॉ. एम. वश्रीमती एस.एन.चव्हानी. वेणुगोपालन, प्रधान वैज्ञानिक, कृषि तथा प्रमुख पीएमई प्रकोष्ट इस क्यूआरटी दल के सचिव थे।

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक	विषय	स्थल	ग्राहक	सहभागियों की संख्या	समन्वयक
19.07.2012	पोषण उद्यानं विन्यवास एवं प्रबंधन	नवेगाँव साधू	आर वाई	23	श्रीमती एस.एन. चव्हान
21.07.2012	अरहर के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकी	दाताला	पी एफ	20	डॉ. आर. आर. गुप्ता
24.07.2012	सोयाबीन में कीट प्रबंधन	मानोरी	पी एफ	25	डॉ. आर. आर. गुप्ता
28.07.2012	कपास उत्पादन तकनीकी	केवीके	ई एफ	50	डॉ. ए. एस. तायडे
	समेकित डेअरी कृषि	केवीके	पी एफ	20	डॉ. यू. वी. गलकाटे
	मृदा परीक्षण एवं एकीकृत पोषण प्रबंधन का महत्व	केवीके	पी एफ	20	श्री. एच. बी. कुंभलकर
28.07.2012	कपास के नाशी जीव प्राकृतिक शत्रुओं की पहचान	बोरूजवाडा	आर वाई	22	डॉ. आर. आर. गुप्ता
03.08.2012	मिर्च के बालवाटिका का प्रबंधन	थाना	पी एफ	19	श्री. गुलबीर सिंह
	ग्रामीण घरेलू खेती के लिए सुधारित देशी किस्मों का प्रवेश	नवेगाँव साधू	पी एफ	19	डॉ. यू. वी. गलकाटे
07.08.2012	नगपुरी संतरे मे फल गिरने के उपाय व प्रबंधन	गोंडी दिग्रस	पी एफ	22	श्री. गुलबीर सिंह
10.08.2012	मृदा परीक्षण हेतु अभीज्ञता जागरण व मृदा स्वास्थ्य अभियान	गोंडी दिग्रस	पी एफ व आर वाई	30	श्री. एच. बी. कुंभलकर
10.08.2012	पशु आहार में खनीजो एवं नमक का उपयोग	गोंडी दिग्रस	पी एफ	15	डॉ. यू. वी. गलकाटे
21.08.2012	एनएडीईपी कम्पोस्ट का एक फॉसफेटके द्वारा संवर्धन	केवीके	पी एफ व आर वाई	21	श्रीमती एस. एन. चव्हान
28.08.2012	संतरे के साथ अंतरफसल	उबाली	पी एफ	20	श्री. गुलबीर सिंह
29.08.2012	बीटी कपास में चूषक कीट प्रबंधन	बोरूजवाडा	आर वाई	28	डॉ. आर. आर. गुप्ता
10.09.2012	खाद्य में मिलावट की पहचान	नवेगाँव साधू	पी एफ व आर वाई	23	श्रीमती एस. एन. चव्हाण
14.09.2012	कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी	केवीके	पी एफ	35	डॉ. ए. एस. तायडे
	कपास में नमूनों का एकत्रीकरण व आईएनएम	केवीके	पी एफ	35	श्री. एच. बी. कुंभलकर
17.09.2012	कीटनाशक प्रयोग तकनीकी	मानोरी	आर वाई	25	डॉ. आर. आर. गुप्ता
18.09.2012	स्वच्छ कपास चुनाई की विधि	काल डोंगरी	पी एफ	27	श्रीमती एस. एन. चव्हाण
04.10.2012	तूअर में नाशी जीव प्रबंधन	दाताला	पी एफ	17	डॉ. आर. आर. गुप्ता
04.10.2012	प्याज उगाने की वैज्ञानिक विधि	थाना	पी एफ	15	श्री. गुलबीर सिंह
08.10.2012	मृदा स्वास्थ्य अभियान	हलदगाँव	पी एफ	25	श्री. एच. बी. कुंभलकर
10.10.2012	वैज्ञानिक विधि द्वारा डेअरी प्रबंधन	गोंडी दिग्रस	पी एफ व आर वाई	40	डॉ. यू. वी. गलकाटे
	मृदा नमूनों के एकत्रीकरण की तकनीकी	गोंडी दिग्रस	पी एफ व आर वाई	40	श्री. एच. बी. कुंभलकर
12.10.2012	गायों एवं भैसों मे आवेग की पहचान	मेंढ़ाकी	पी एफ	16	डॉ. यू. वी. गलकाटे
23.10.2012	चने में जड़सड़न/मुरझान के प्रबंधन हेतु बीज शोधन	बोरूजवाडा	पी एफ	24	डॉ. आर. आर. गुप्ता
31.10.2012	चने में जड़सड़न/मुरझान के प्रबंधन हेतु बीज शोधन	बोरूजवाडा	पी एफ	24	डॉ. आर. आर. गुप्ता
12.11.2012	सोयाबीन आटा व सोयाबीन वडी बनाने हेतु संसाधन की तकनीकी	केवीके	आर वाई व पी एफ	19	श्रीमती एस. एन. चव्हाण
31.10.2012	चने में जड़सड़न/मुरझान के प्रबंधन हेतु बीज शोधन	बोरूजवाडा	पी एफ	24	डॉ. आर. आर. गुप्ता
12.11.2012	सोयाबीन आटा व सोयाबीन वडी बनाने हेतु संसाधन की तकनीकी	केवीके	आर वाई व पी एफ	19	श्रीमती एस. एन. चव्हाण
17.11.2012	स्वरोजगार हेतु फलों एवं सब्जियों के रोप वाटिका की स्थापना	गोरेवाड़ा	पी एफ व आर वाई	50	श्री. गुलबीर सिंह
	बकरी पालन तथा गृह मूर्गीपालन एक सह व्यवसाय	गोरेवाड़ा	पी एफ व आर वाई	50	डॉ. यू. वी. गलकाटे
20.11.2012	तूअर में हेलीकोवर्पा प्रबंधन	अंगेवाडा	पी एफ	25	डॉ. आर. आर. गुप्ता
21.11.2012	कृषि कचरे से कोयला निर्माण	केवीके	आर वाई	09	डॉ. आर. आर. गुप्ता
22.11.2012	तूअर में हेलीकोवर्पा प्रबंधन	अंगेवाडा	पी एफ	25	डॉ. आर. आर. गुप्ता
27.11.2012	लहसून उत्पादन तकनीकी	थाना	पी एफ	18	श्री. गुलबीर सिंह
	गायों में अउपजाऊताः कारण एवं उपाय	करंडला	पी एफ	20	डॉ. यू. वी. गलकाटे
29.11.2012	सुधारित कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी एवं वन प्रजाति उद्यान तथा एचडीपीएस प्लाट का दौरा	केवीके एवं सीआईसीआर निदर्शन प्लाट	ई एफ	30	डॉ. विनीता गोतमारे डॉ. ए. आर. राजू एवं श्री. एच. बी. कुंभलकर
	हरित गृह कृषि	केवीके	आर वाई व पी एफ	41	श्री. गुलबीर सिंह
30.11.2012	आय अर्जन हेतु हरित गृह में बीजांकुर को उगाना	थाना	आर वाई	9	श्री. गुलबीर सिंह
11.12.2012	एकीकृत पोषण प्रबंधन, मृदा परिक्षण व मृदा नमूनों का एकत्रीकरण	केवीके	आर वाई	14	श्री. एच. बी. कुंभलकर
12.12.2012	गृहोचित उर्जा बचत साधन	केवीके	आर वाई	19	श्रीमती एस. एन. चव्हाण

ग्राहक (पी एफ– कृषि कर रहे किसान, आर वाई – ग्रामीण युवक, ई एफ – विस्तार कार्यकरता)

उमरेड ब्लॉक, नागपुर जिले में एनजीओ–वर्ल्ड विजन, उमरेड संस्था के साथ एक दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम मृदा नमूना एकत्रीकरण तकनीकी, मृदा परीक्षण का महत्व, आईएनएम व रोपवाटिका प्रबंधन पर 5, सितंबर, 2012 को आयोजित किया गया। इसके आयोजक श्री. हरीश कुंभलकर (कार्यक्रम सहायक) एवं श्री. गुलबीर सिंह (एसएमएस, बागवानी) द्वारा किया गया। इस आयोजन में 250 युवकों ने भाग लिया जिसमे 90 महिलाए थीं।

नैदानिक सर्वेक्षण का आयोजन

1. भिवापुर ब्लाक के थाना एवं नवेगाँव (साधू) ग्रामों में 3, अगस्त, 2012 को एक नैदानिक सर्वेक्षण का आयोजन ''मिर्च में जड़ सड़न'' विषय पर किया गया। छः रोपवाटिकाओं का नैदानिक सर्वेक्षण किया गया तथा 15 कृषकों को इससे लाभ प्राप्त हुआ। तीन नैदानिक सर्वेक्षण बीटी कपास के चूषक नाशी जीवों के लिए 29, अगस्त, 2012; 17, सितंबर, 2012; 4, अक्तूबर, 2012 को क्रमशः बोरूजवाड़ा, मानोरी तथा दताला व सुकली ग्रामों मे किया गया।

2. उमरेड तहसील, जिला नागपुर के नवेगाँव (साधू) एवं थाना ग्रामों में एक नैदानिक सर्वेक्षण का आयोजन किया गया। इस आयोजन में 22 गायों, 15 बकरियों व 85 देशी मूर्गियों की जाँच की गई जिससे 16 किसानों को लाभ प्राप्त हुआ। इन लोगों को पशुओं का बिमारियों से बचाने के लिए स्वास्थ प्रबंधन तकनीकि को अपनाने की सलाह प्रदान की गई।

3. ग्राम गोंडी दिग्रस, तहसील काटोल, जिला नागपुर में 11, अक्तूबर, 2012 को नैदानिक सर्वेक्षण का आयोजन किया गया। केवीके के विशेषज्ञों द्वारा कपास के खेतों में लालीमा एवं दहिया (घूसर फफूंद) रोगों की पहचान की गई। इस बीमारी की घटनाओं में कमी लाने के लिए किसानों को नियंत्रण उपाय/सुधार विधियों/छिड़काव तालीमा इत्यादि की सलाह प्रदान की गई।3. ग्राम गोंडी दिग्रस, तहसील काटोल, जिला नागपुर में 11, अक्तूबर, 2012 को नैदानिक सर्वेक्षण का आयोजन किया गया। केवीके के विशेषज्ञों द्वारा कपास के खेतों में लालीमा एवं दहिया (घूसर फफूंद) रोगों की पहचान की गई। इस बीमारी की घटनाओं में कमी लाने के लिए किसानों को नियंत्रण उपाय/सुधार विधियों/छिड़काव तालीमा इत्यादि की सलाह प्रदान की गई।

विदर्भ किसान मेले के अवसर पर डॉ. गलकाटे सहभागियों को संबोधित करते हुए।

"एग्रोटेक–2012", अकोला में सहभागिता

एग्रोवन एक्सपो–2012, पुणे में सहभागिता

वर्धा में एचडीपीएस कपास उत्पादक किसानों का दौरा व चर्चा

4. देवली व पुलगाँव ब्लॉक जिला वर्धा में राज्य कृषि विभाग के संयोजन में सघन रोपण प्रणाली एचडीपीएस निदर्शन परीक्षणों में उपज मापदण्ड आधारित अवलोकनों हेतु नैदानिक सर्वेक्षण 12, दिसंबर, 2012 को आयोजित किया गया। इन अवलोकनों में हरे बॉलों की संख्या, चुने गए बॉलों की संख्या, खुले हुए बॉलों की संख्या तथा प्रति मीटर पौद्यों की संख्या को दर्ज किया गया।

समूह चर्चा का आयोजन

- "हाल ही में व्याई संकरित गायों में अचानक दूग्ध की कमी" विषय पर एक समूह चर्चा का आयोजन 28.08.2012 को काटोल तहसील के गोंडी–दिग्रस ग्राम में प्रगतिशील डेअरी कृषकों के लिए आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उबाली व गोंडी दिग्रस ग्रामों के 12 डेअरी कृषकों ने भाग लिया तथा अपने अनुभवों को प्रस्तुत किया। एसएमएस, पशु विज्ञान नें इन्हें अचानक दुग्ध में कमी से बचने के लिए इन पशुओं के खाद्य आहार में बाईपास वसा/200 ग्राम/दिन/गाय को सम्मिलित करने की सलाह दी। उच्च दुग्ध उत्पादन करने वाली तुरंत व्याई गायों में अचानक दुग्ध की कमी से बचने के लिए इनके आहार में बाईपास वसा को सम्मिलित करने से विकसित ऋणात्मक उर्जा को संतुलित किया जा सकता है। चारा उगाने वाले खेतों व डेअरी इकाईयों का भी दौरा किया गया।
- हिर्सुटम एवं देशी कपास के सघन रोपाई प्रणाली पर एक समूह चर्चा का आयोजन को सुकली ग्राम, हिंगणघाट तहसील, जिला वधा में 13, सितंबर, 2012 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के संसाधन व्यक्ति श्री. हरीष कुंभलकर थे।
- हिर्सुटम एवं देशी कपास के सघन रोपाई प्रणाली पर एक समूह चर्चा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन ग्राम आगरगाँव, मलकापुर व सोनेगाँव, देवली तहसील, जिला वर्धा में 12, अक्तूबर, 2012 को राज्य कृषि विभाग के संयोजन में किया गया। इस कार्यक्रम के संसाधन व्यक्तियों में डॉ. ए. आर. राजू, श्री. हरीष कुंभलकर, श्री. राऊत (वृत अधिकारी, देवली) सम्मिलित थे।

प्रदर्शनियों एवं किसान मेलों में सहभागिता

- धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय कृषि प्रदर्शनी में सीआईसीआर ने सहभागिता की। इस प्रदर्शनी का आयोजन दीक्षा भूमि परिसर, नागपुर में 23 से 25, अक्तूबर, 2012 को किया गया था। इस अवसर पर सीआईसीआर ने अपना स्टॉल स्थापित किया था। 20,000 से अधिक किसान एवं ग्रामीण युवक इस स्टॉल पर आए तथा विभिन्न तकनीकियों से अवगत हुए।
- सकाल समूह द्वारा 1 से 5, दिसंबर, 2012 को पुणे में आयोजित राष्ट्रीय प्रदर्शनी में सीआईसीआर ने सहभागिता प्रदान की। इस

असवर पर अनेक किसानों, कृषक महिलाओं, ग्रामीण युवक, विद्यार्थी, व्यवसायी, अधिकारियों, इत्यादि ने सीआईसीआर द्वारा स्थापित स्टॉल का दौरा किया तथा सीआईसीआर द्वारा विकसित तकनीकियों अर्थात बीटी परीक्षण किट, जीयूएस परीक्षण किट, मिले नाशी, मिल विमुक्त (किट), कपास एवं सरनम कपास में एचडीपीएस, इत्यादि में रूचि दिखाई। डॉ. यू. वी. गलकाटे, एसएमएस, श्री. हरीष कुंभलकर, कार्यक्रम सहायक, श्री. पी. पी. गोकुलपुरे एवं श्री. आर. वी. सलामे इस कार्यक्रम में सहभागी थे।

- राज्य स्तरीय प्रदर्शनी एग्रो–टेक–2012, जिसका आयोजन डॉ. पीडीकेवी द्वारा अकोला में 27 से 29, दिसंबर, 2012 को किया गया था में केवीके, सीआईसीआर ने सहभागिता की। सीआईसीआर द्वारा विकसित अनेक तकनीकियों का निदर्शन यहाँ पर किया गया था जिसे आगंतुकों को समझाया गया। कपास संबंधित प्रश्नों के भी उत्तर इस दौरान प्रस्तुत किये गये।
- ग्राम गोरेवाड़ा, जिला नागपुर में 17, नवंबर, 2012 को आयोजित विदर्भ किसान मेले में डॉ. यू. वी. गलकाटे, श्री. गुलबीर सिंह व डॉ. राम रतन गुप्ता ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया एवं गड़चिरोली जिलों से आए 400 से अधिक कृषकों, कृषक महिलाओं व भूमि विहीन श्रमिकों ने इस मेले में उपस्थिति दर्ज की।

XVII वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक (एस ए सी)

केवीके, सीआईसीआर, नागपुर के ग्टप्प एसएसी बैठक का आयोजन डॉ. जगवीर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, सीआईसीआर, नागपुर की अध्यक्षता में 13, जुलाई, 2012 को किया गया। राज्य कृषि विभाग के प्रतिनिधियों, पशु पालन विभागों, दुग्ध उत्पादन विभागों व गृह विज्ञान तथा 4 किसानों सहित कुल 23 सदस्यों ने इस बैठक में हिस्सा किया।

अनुसंधान उपलब्धियाँ

बहु रोग प्रतिरोधी क्रमों (एमडीआर) का विकास

दो बहु रोग प्रतिरोधी (एमडीआर) क्रम सीआईएनएच–एमडीआर–2–3 व सीआईएनएच–एमडीआर– 8–28 को सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित किया गया। इसका विकास (एलआरए ग एसआरआईएफ4) ग टी ग बोनहेम के तीन मार्गीय संकरण द्वारा किया गया जिसका उद्देश्य मध्य भारत के बारानी अवस्थाओं में बहु रोगों के विरूध्द प्रतिरोधी किस्मों को विकसित करना था। यह किस्म चूषक कीटों, पर्ण लालिमा तथा शुष्क अवस्था के विरूध्द भी प्रतिरोधी है।

सीआईएनएच – एमडीआर– 2–3	सीआईएनएच – एमडीआर– 8–28
विशिष्ट गुणधर्म	विशिष्ट गुणधर्म
1. बहुरोग सहनशीलता के साथ पर्ण लालिमा एवं जल प्रतिबल सहनशीलता	1. बहुरोग सहनशीलता के साथ पर्ण लालिमा एवं जल प्रतिबल सहनशीलता
2. अत्याधिक बड़ा बॉल आकार तथा औसत बॉल भार 4.5 ग्राम	2. अत्याधिक बड़ा बॉल आकार तथा औसत बॉल भार 4.34 ग्राम
3. अतिरिक्त तंतु लंबाई व उच्च तंतु मजबुती	3. लंबा तंतु लंबाई व उच्च तंतु मजबुती
तंतु गुणवत्ता	तंतु गुणवत्ता
1.जीओटी : 34.27 प्रतिशत	1. जओटी : 39.83 प्रतिशत
2. कपास उपज : 13.70 क्विं/हे. (चुनाई के पश्चात)	2.कपास उपज : 17.28 क्विं/हे. (चुनाई के पश्चात)
3. तंतु लंबाई : 33.2 मि. मी.	3.तंतु लंबाई : 31.5 मि. मी.
4. यू आर प्रतिशत : 52	4.यू आर प्रतिशत : 54
5. माईक्रोनेयर : 4.1	5.माईक्रोनेयर : 4.5
6. जी/टेक्स : 22.0	6.जी/टेक्स : 23.3
7.ई एल प्रतिशत : 6.2	7. ई एल प्रतिशत : 6.3
8.एस एफ आई : 4.7	8.एस एफ आई : 5.6

रेनीफार्म सूत्रकृमि रोटीलेनचुलुस रेनीफार्मिस–बुलढ़ाणा में कपास के विकास में अवरूध्दता निमित्त साहचर्य

महाराष्ट्र के बुलढ़ाणा जिले में ड्रिप सिंचाई के अंतर्गत मौसम पूर्व कपास में विकास अवरोधिता के कारणों को पहचानने के लिए एक सर्वेक्षण का आयोजन जुलाई, 2012 में किया गया। विकास अवरूध्द कपास एवं स्वस्थ कपास के जड़ों के पास से मृदा नमूनों को एकत्रित किया गया तथा अलग अलग कोब्स छन्नी में धोकर पानी को निथारा गया। विकास अवरूध्द कपास से एकत्रित रेनीफार्म निमेटोड अवयस्क मादाओं की संख्या का मान 290 से 356 प्रति 250 ग्राम मृदा पाया गया। स्पष्टतया स्वस्थ कपास के पौधों में रेनीफार्म सूत्रकृमि की संख्या, अवयस्क मादाओं का मान 60–65 प्रति 250 ग्राम मृदा पाया गया। रेनीफार्म निमेटोड के उच्च संख्या के स्तर का कारण बिना फसल चक्र में परिवर्तन व ड्रिप सिंचाई को दिया जा सकता है क्योंकि इस प्रकार से निमेटोड (सूत्र कृमि) की जन संख्या के वृध्दि हेतु सुगम वातावरण प्राप्त होता है।

रेनीफार्म निमेटोड संक्रमित प्रक्षेत्र

कपास की जडों में मादा रेनीफार्म सूत्रकृमि

सीआईसीआर, नागपुर में किए गए कार्यों के अनुसार रेनीफार्म सूत्र कृमि की संख्या एक सूत्रकृमि प्रति ग्राम मृदा में होना चाहिये। आईएआरआई में किए गए कार्यों के अनुसार हरित गृह अवस्थाओं के अंतर्गत तना भार व जड़भार के लिए दर्ज की गई प्रतिरोधिता का स्तर 16.2 से 18 सूत्र कृमि प्रति 200 ग्राम मृदा, 60 दिनों के अंतराल पर होनी चाहिए (सूद एट एल, 1984)। हांलाकि इस अवसीमा स्तर में परिवर्तन किस्मों, स्थानों तथा बारानी अथवा सिंचाई अवस्था के अनुसार हो सकता है। इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि सिंचाई/सूक्ष्म सिंचाई के अंतर्गत क्षेत्रों में सूत्र कृमि संख्या की सतत निगरानी/अनुविक्षण की जानी चाहिए।

नंदिनी गोकटे नरखेडकर, पी. के. मुखर्जी,
अर्जुन तायडे व संध्या क्रांति

आर्थिक पुनरावलोकन

कपास के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य

भारत सरकार द्वारा प्रति वर्ष कपास के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को कपास की कृषि के आरंभ के पूर्व निश्चित किया जाता है, इस का निर्धारण दो मूलभूत किस्मों जे–34 (राजस्थान) व एच–4 पर आधारित होता है जिसे कृषि व्यय एवं मूल्य आयोग (सीएसीपी) के संस्तुतियों के अनुसार किया जाता है। अन्य किस्मों के एमएसपी का निर्धारण वस्त्र आयुक्त कार्यालय, मुंबई द्वारा उनकी गुणवत्ता के अनुरूप किया जाता है। जब कमी कपास की कीमत एमएसपी से नीचे गिर जाती है। तब भारतीय कपास कारपोरेशन (सीसीआई) तुरंत बाजार में हस्तक्षेप द्वारा बिना मात्रिक सीमा के कपास की खरीद करती है।

सीएसीपी की संस्तुति पर कार्य करते हुए सरकार द्वारा न्यूनतम कपास समर्थन मूल्य (एमएसपी) कृषि वर्ष 2012–13 (जुलाई से जून) के लिए रु. 3600 प्रति क्विंटल जे–34 (राजस्थान) तथा रु. 4000 प्रति क्विंटल एच–4 के लिए निर्धारित की गई है। गत वर्ष की तुलना में यह राषि . 800 रुपए से अधिक है। वर्तमान में कपास कृषकों को लगभग रु. 5000 प्रति हेक्टर खर्च करना पड़ रहा है। अतएव वर्तमान एमएसपी के अनुसार इस खर्च को वहन करने के लिए इन्हें 12 क्विंटल प्रति हेक्टर कपास से अधिक की उपज प्राप्त करना होगा।

सारणी–1 में गत कुछ वर्षों के न्यूनतम कपास समर्थन मूल्यको प्रदर्शित किया गया हैं। जे–34 के एमएसपी वर्ष 2007–08, रु. 1800 प्रति क्विंटल को बढ़ाकर रु. 3600 प्रति क्विंटल, वर्ष 2012–13 में किया गया है। एच–4 के एमएसपी का इस दौरान रु. 2030 से बढ़ाकर रु. 3900 प्रति क्विंटल किया गया है। इन वर्षों में एमएसपी में वृध्दि समानांतर नहीं रही है। वर्ष 2009–10 तथा वर्ष 2010–11 में न्यूनतम कपास समर्थन मूल्य में कोई वृध्दि नहीं की गई थी।

सारणी –1 भारत में कपास की एमएसपी (रु. प्रति हेक्टेयर)

कस्म	2007–08	2008–09	2009–10	20010–11	2011–12	2012–13
जे–34 (राजस्थान)	1800	2500	2500	2500	2800	3600
एच–4	2030	3000	3000	3000	3300	3900

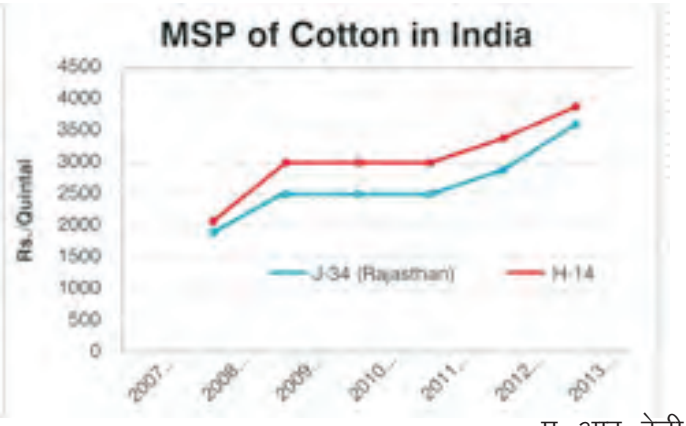

ए. आर. रेड्डी

बैठकों / कार्यशालाओं / प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता

सचिव (एनसी) की अध्यक्षता में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त तकनीकि विशेषज्ञ समिति के समक्ष जी एम फसल प्रक्षेत्र परीक्षणों से संबंधित समस्याओं के प्रस्तुतीकरण पर 10, जुलाई, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित चर्चा में डॉ. के. आर. क्रांथी, निदेशक, सीआईसीआर, नागपुर सम्मिलित हुए। एनआईएमआईएलटीआई टास्क फोर्स बैठक जिसका आयोजन 9, अगस्त, 2012 तथा 21 से 22, अगस्त, 2012 को एनएएससी में डीजी, आईसीएआर की अध्यक्षता में आयोजित 'ज्ञान बैठक' में भी भाग लिया।

- जी एम फसल उत्पादन पर कृषि के लिए संसदीय स्थाई समिति द्वारा प्रस्तुत वर्तमान रिपोर्ट के परिप्रेक्षय में डीजी, आईसीएआर द्वारा बुलाई गई वरिष्ठ वैज्ञानिकों की सलाह बैठक में निदे ाक, डॉ. के. आर. क्रांति ने भाग लिया। इस बैठक का आयोजन 23, अक्तूबर, 2012 को एनएएससी काम्पलेक्स में किया गया था। इन्होंने गोवा में 9 से 10, नवंबर, 2012 को आयोजित क्षेत्रिय समिति बैठक में भी भाग लिया।
- श्री. गुलबीर सिंह (एसएमएस बागवानी) ने मापदण्ड पाठ्यक्रम (पौध चिकित्सक कैसे बना जाए) जिसका आयोजन डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन फाऊंडेशन एवं सीएबीआई, द्वारा 5 से 8 नवंबर, 2012 को पांडुचेरी में किया गया था में सम्मिलित हुए।
- डॉ. यू. वी. गलकाटे (एसएमएस, पशु विज्ञान), केवीके, सीआईसीआर, नागपुर ने सलाहकार समिति बैठक में भाग लिया। इस बैठक का आयोजन ऑल इंडिया रेडियो (आकाशवाणी) द्वारा नीबू वर्गीय अनुसंधान केन्द्र, वंडली, काटोल में 29, नवंबर, 2012 को किया गया था।

मानव संसाधन विकास

राष्ट्रीय प्रशिक्षण

वैज्ञानिक का नाम	प्रशिक्षण का नाम	स्थान	अवधि
डॉ. सुरेन्द्र कुमार वर्मा	कपास में एकल न्यूक्लीयर पॉलीमारफिजम (एसएनपीएस) के उपयोग से डीएनए क्रमीकरण द्वारा जीनोटाईपिंग (जीवीएस) यूएसए पहल। (डीबीटी – सीआरईएसटी पुरस्कार 2010)	कालेज स्टेशन व टेक्सास ए व एम विश्वविद्यालय,	27–10–2011 से 14–10–2012
डॉ. के. आर. क्रांथी	नेतृत्व निश्चय निर्धारण यथेष्ट संस्थानीय निष्पादन कार्यकारी शिक्षा, केंब्रीज, यू के.	हार्वड केनेडी विद्यालय	28–10–2012 से 01–11–2012

राष्ट्रीय प्रशिक्षण

अधिकारी का नाम	प्रशिक्षण का नाम / पाठ्यक्रम का नाम	स्थान	अवधि
डॉ. पी. के. चक्रबर्ती डॉ.एम.वी.वेणुगोपालन डॉ. एस.एम.पालवे	कपास प्रजनकों के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण	सीरकाट, मुंबई	09.05.2011 से 11.05.2012
डॉ. एस. मनिक्कम	कृषि के लिए महत्वपूर्ण फसल जीन्स की खोज हेतु कम्प्यूटेशनल जीनोम विश्लेषण	एनवीपीपीआर नई दिल्ली	24.09.2012 से 29.09.2012

डॉ. डी. मोंगा	नेतृत्व विकास के लिए प्रबंधन विकास कार्यक्रम	एनएएआरएम, हैद्राबाद	8.10.2012 से 19.10.2012
डॉ. ए. आर. राजू	खरपतवार प्रबंधन में प्रगतियाँ	डीडब्लूएसआर, जबलपुर	03.10.2012 से 19.10.2012

कीथ रनकार्न पुरस्कार

यूरोपियन भूविज्ञान (जियो साईंस) संघ (ईजीयू) जनरल असेंबली 2012 में एक सत्र के संयोजन हेतु डॉ. ब्लेज डिसूजा को कीथ रनकार्न पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सर्वोत्कृष्ट मौखिक शोध पत्र पुरस्कार – 2012

डॉ. के. शंकर नारायणन सर्वोत्कृष्ट शोध पत्र पुरस्कार

डॉ. के. शंकर नारायणन को इनके शोध पत्र जिसका शीर्षक था ''बीटी कपास (गॉसीपियम हिर्सुटम) उत्पादन में कम मूल्य ड्रिप सिंचाई एक उपयुक्त साधन'' जो इंडियन जर्नल ऑफ एग्रोनामी, क्रमांक 55(4): 312–318 (दिसंबर 2010) को प्रकाशित हुआ के लिये सर्वोत्कृष्ट शोधपत्र पुरस्कार – 2012 के लिए प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार, आईएआरआई, नई दिल्ली में आयोजित तृतीय अंतरराष्ट्रीय एग्रोनामी कांग्रेस के उद्घाटन समारोह में दिया गया, जिसका प्रायोजन इंडियन सोसायटी ऑफ एग्रोनामी के कार्यकारी परिषद ने किया था।

सर्वोत्कृष्ट मौखिक शोध पत्र प्रस्तुति पुरस्कार

डॉ. एम. वी. वेणुगोपालन, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि विज्ञान) की उत्कृष्ट मौखिक शोध पत्र प्रस्तुति पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसका शीर्षक ''एचडीपीएस में ब्राझील अनुभव तथा भारतीय परिप्रेक्षय'' था। यह पुरस्कार भारतीय कपास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी वैश्विक नेतृत्व हेतु तैयारी के अंतर्गत 18 से 20 दिसंबर को प्रमुख कपास अनुसंधान केन्द्र, एनएयू, सूरत में प्रदान किया गया।

इस संगोष्ठी का आयोजन कृषि विज्ञान के गुजरात परिसंघ नवसारी, भारतीयकपास सुधार परिषद, मुंबई, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय व केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा किया गया था।

उत्कृष्ट पोस्टर प्रस्तुति पुरस्कार

डॉ. चिन्ना बाबू नायक, वैज्ञानिक (कीट शास्त्र) को अपने पोस्टर जिसका शीर्षक ''गुलाबी बॉलवर्म पेक्टीनोफोरा गॉसीपियेला (साऊंडर्स) की भारत में कपास पर घटनाओं के बदलते परिदृष्य'' था के लिए उत्कृष्ट पोस्टर पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार ''वैश्विक कपास उत्पादन तकनीकियों तथा जलवायु परिवर्तन'' पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान प्रदान किया गया जिसे सीसीएसएचएयू, हिसार में 10 से 12, अक्तूबर, 2012 को आयोजित किया गया था।

डॉ. वी. एस. नगरारे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कीट शास्त्र) को उत्कृष्ट पोस्टर पुरस्कार इनके पोस्टर के लिए प्राप्त हुआ जिसका शीर्षक था ''विवरण हानि, परिदृष्य, मौसम आधारित अनुमान व मिरिडबग (केम्पीलोमा लिविड़ा, रिउटर; मिरिडे; हेम्पीटेरा) का मध्य भारत के बारानी कपास में प्रबंधन''। यह पुरस्कार खाद्य सुरक्षा हेतु पौद्य स्वास्थ्य प्रबंधन के अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, 28 से 30, नवंबर, 2012 के दौरान प्रदान किया गया।

डॉ. के. वेलूमोर्गेन को इनके पोस्टर के लिए उत्कृष्ट पोस्टर पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसका शीर्षक था'' भारत के काली मृदा क्षेत्र के कृषि पारिस्थितिकीय उपक्षेत्रों में सूक्ष्म जीवीय विभिन्नता सूचकांक'' यह पुरस्कार ''स्थाई कृषि हेतु भूमि संसाधनों का प्रबंधन'' के राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान प्रदान किया गया जिसका आयोजन एनबीएसएस व एलयूपी, नागपुर द्वारा 12 से 13, अक्तूबर, 2012 को किया गया था।

मान्यताएँ

डॉ. एम. वेणुगोपालन, प्रधान वैज्ञानिक, (सस्य विज्ञान) तथा पीएमई प्रकोष्ट, प्रमुख को अंतरराष्ट्र कपास अनुसंधान संघ के कार्यकारी समिति का सदस्य (आईसीआरए), 2012–2016 के कार्यकाल हेतु अंतरराष्ट्रीय कपास सलाहकार समिति (आईसीएसी) वाशिंगटन द्वारा नामित किया गया।

डॉ. पी. के. चक्रबर्ती को खाद्य एवं कृषि विज्ञान संस्थान, लोरिड़ा विश्वविद्यालय, गेनेसविले, एफ आई, यूएसए में शिष्टाचार प्राध्यापक की पहचान प्राप्त हुई। यह पहचान इन्हें इनके पोस्ट डाक्ट्रल अनुसंधान व विशेष अनुसंधान सहयोग तथा अतिथि वैज्ञानिक के कार्यों के लिए प्रदान किया गया।

डॉ. पी. मुखर्जी, प्रधान वैज्ञानिक, फसल सुरक्षा विभाग, का चयन राष्ट्रीय साईंस अकादमी, (इलाहाबाद) के फेलो के रूप में किया गया।

डॉ. नंदिनी गोकटे नारखेडकर, प्रधान वैज्ञानिक, फसल सुरक्षा विभाग, को डॉ. पीडीकेवी, अकोला के कीटशास्त्र/निमेटोलाजी विभाग के अध्ययन बोर्ड के सदस्य के लिए नामित किया गया।

वैज्ञानिकों का गोष्ठी/परिसंवाद/कार्यशालाओं में सहभागिता

क्रम संख्या	संगोष्ठी/परिसंवाद/कार्यशाला	स्थान एवं दिनांक	सहभागी
1	जैव सुरक्षा पर यूएनईएफ/जीईएफ सहायित फेज प्प क्षमता निर्माण प्रकल्प की प्रारंभिक कार्यशाला	एन ए एस सी काम्पलेक्स नई दिल्ली, 18 से 19, जून, 2012	श्रीमती मुक्ता चक्रबर्ती
2	युगांडा में आईएएफएस कार्यशाला का प्रारंभ	सीडीओ, कंपाला 28, जून, 2012	डॉ. ब्लेज डिसूजा
3	मलावी में आईएएफएस कार्यशाला का प्रारंभ	ब्लोटिरे 3, जुलाई, 2012	डॉ. ब्लेज डिसूजा
4	कपास अनुसंधान के लिए नवीन प्रयास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, कपास सुधार हेतु, भारतीय सोसायटी, नागपुर अध्याय	केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर 17, सितंबर, 2012	डॉ. ब्लेज डिसूजा, डॉ. एम. वी. वेणुगोपालन, डॉ आर. बी. सिंगनधुपे, डॉ. जगवीर सिंह, डॉ. ए. आर. राजू, श्रीमती एम. चक्रबर्ती, ई. जी. मजूमदार, डॉ. ए. आर. रेड्डी, डॉ. के. वेलूमोर्गेन
5	अंतरराष्ट्रीय कपास जिनोम अनुसंधान पहल संगोष्ठी, 2012	रेले, नार्थकेरोलीना, यूएसए, 9 से 12, अक्तूबर, 2012	डॉ. एस. के. वर्मा
6	वैश्विक कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी तथा जलवायु परिवर्तन पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी	सीसीएस, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार, 10 से 12, अक्तूबर, 2012	डॉ. आर. बी. सिंगनधुपे, डॉ. जे. सिंह, डॉ. एस. एम वासनीक, डॉ. ए. आर. राजू, ई. जी. मजूमदार डा. ए. आर रेड्डी, डॉ.नंदिनीगोकट नरखेडकरे डॉ. ओ.पी.टुटेजा, डी.मोंगा, डॉ. एस. एल. आहुजा, डॉ. एस.मणिक्कम, डॉ. वी. एन. वाघमारे, डॉ. पी. नलायीनी, डॉ. के. शंकरनारायणन डॉ. एस. उषा रानी, डॉ. वी. चिन्ना बाबू नायक, डॉ. विनीता गोतमारे व डॉ. एम. श्रवनन
7	भूमि संसाधनों का स्थाई कृषि हेतु प्रबंधन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	एनबीएसएस व एलयूपी, नागपुर, 12 से 13, अक्तूबर, 2012	डॉ. के. वेलमोरूगेन
8	कपास एवं रोगजनकों के विशेष संदर्भ में आण्विक	पीडीकेवी, अकोला 30 से 31, अक्तूबर, पौद्य रोगविज्ञान 2012	डॉ. पी. के. चक्रबर्ती
9	विश्व नीम परिसंवाद	होटल सन एण्ड सैण्ड, नागपुर, 21 से 24, नवंबर, 2012	डॉ. (श्रीमती) एस. क्रांति, श्री. ए. सम्पथ कुमार
10	तीसरा अंतरराष्ट्रीय सस्य विज्ञान कांग्रेस	नई दिल्ली, 26 से 30, दिसंबर, 2012	डॉ. ब्लेज डिसूजा, डॉ. पी. चक्रबर्ती, डॉ. पी. नलायिनी, डॉ. के. शंकरनारायणन डॉ. यू. उषारानी
11	वर्गीकरण, अस्थानीय संरक्षण तथा फफूंद की जैव संभावना पर राष्ट्रीय कार्यशाला	आगरकर अनुसंधान संस्थान, पुणे, 30, नवंबर, 2012	डॉ. पी. के. चक्रबर्ती
12	दीर्घकालिक कृषि हेतु पारंपरिक व वर्तमान पौद्य रोगविज्ञान का सम्मिश्रण	भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैग्लोर, 4 से 6, दिसंबर, 2012	डॉ. पी. के. चक्रबर्ती
13	खाद्यान्न सुरक्षा दृविधा : पादप स्वास्थ्य व जलवायु परिवर्तन समस्याओं पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी	वीसी केवीके, कल्याणी, 7 से 9, दिसंबर, 2012	डॉ. पी. के. चक्रबर्ती
14	आईसीएआर केवीएमई प्रकोष्ठो के पुनरावलोकन पर कार्यशाला	एनडीआरआई, कर्नाल	डॉ. एम. वेणुगोपालन
15	एग्रोवन समस्याओं व जलवायु परिवर्तन पर क्षेत्रीय कार्यशाला	दीर्घकालिक कृषि हेतु केन्द्र, हैद्राबाद, 30, दिसंबर, 2012	डॉ. एम. वेणुगोपालन

नाम व पदनाम	संस्थान	दिनांक
नागपुर		
डॉ. एस. वी. अग्निहोत्री, अतिरिक्त सचिव	डीएसी, एम ओए, कृषि भवन, नई दिल्ली	13.07.2012
श्री. अतानु पुरकायस्त, संयुक्त सचिव (टीएमसी)	कृषि एवं सहकारिता विभाग, नई दिल्ली	17.09.2012
डॉ. एन. कृष्ण कुमार, उपमानिदेशक (बागवानी)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केएबी, नई दिल्ली	17.09.2012
डॉ. एन. गोपालकृष्णन, एडीजी (सीसी)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केएबी, नई दिल्ली	17.09.2012
डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेअर व डीडीजी	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केएबी, नई दिल्ली	24.11.2012
डॉ. एस. के. दत्ता, डीडीजी (सी एस)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केएबी, नई दिल्ली	24.11.2012
डॉ. आर. जी. दाणी, कुलपति	डॉ. पीडीकेवी, अकोला	24.11.2012
डॉ. सी. डी. मायी, पूर्व अध्यक्ष, एएसआरबी, अध्यक्ष, क्यूआरटी, सीआईसीआर व एआईसीसीपी	एएसआरबी, नई दिल्ली	17.12.2012
डॉ. (श्रीमती) उषा बरबाले, निदेशक	महीको अनुसंधान केन्द्र, दवलवाड़ी, जालना, महाराष्ट्र	17.12.2012
डॉ. डी. पी. बिरादर, कुल सचिव	यूएएस, रायचूर, कर्नाटक	17.12.2012
डॉ. डी. के. मारोथिया, अध्यक्ष	राष्ट्रीय पारिस्थितिकीय संस्थान, रायपुर	17.12.2012
सिरसा		
डॉ. सी. डी. मायी पूर्व अध्यक्ष, एएसआरबी, अध्यक्ष, क्यूआरटी, सीआईसीआर व एआईसीसीपी	एएसआरबी, नई दिल्ली	20.10.2012
डॉ. (श्रीमती) उषा बरबाले, निदेशक	महीको अनुसंधान केन्द्र, दवलवाड़ी, जालना, महाराष्ट्र	20.10.2012
डॉ. डी. पी. बिरादर, कुल सचिव	यूएएस, रायचूर, कर्नाटक	20.10.2012
डॉ. एच. बी. शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, कीट विज्ञान	इक्रीसेट, हैद्राबाद, (ए.पी.)	20.10.2012

हिन्दी सप्ताह समारोह

• सीआईसीआर, नागपुर में हिन्दी अभिज्ञता पखवाड़ा समारोह 30, सितंबर,2012 से 16, अक्तूबर, 2012 तक पूर्ण उत्साह से मनाया गया हिन्दी भाषा में अपनी क्षमता प्रदर्शन हेतु कर्मचारी सदस्यों के उत्साह वर्धन के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। डॉ. आर. जी. दाणी, कुलपति, डॉ. पीडीकेवी, अकोला, इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप उपस्थित थे तथा उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं मे भागीदारिता के उत्साह की प्रसन्नता की।

• सितंबर, 2012 माह में हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन सीआईसीआर, कोयंबतूर में किया गया। इस के अंतर्गत स्मरण शक्ति प्रतियोगिता, हिन्दी के प्रशासनिक उपयोग, हिन्दी में सामान्य ज्ञान व बोध संबंधित का आयोजन वैज्ञानिको व कर्मचारियों के लिए किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विजयी रहे प्रतियोगियों को हिन्दी दिवस समारोह जिसका आयोजन 14, सितंबर, 2012 को श्री हरिगणेश, हिन्दी प्राध्यापक हिन्दी शिक्षा योजना, कोयंबतूर की अध्यक्षता में हुआ, में पुरस्कार प्रदान किया गया।

• अक्तूबर माह में हिन्दी समिति के 12 सदस्यों ने टीओएलआईसी द्वारा आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं में भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन हिन्दी मास समारोह के अवसर विभिन्न केन्द्रीय सरकार कार्यालयों से कोयंबतूर में किया गया।

• सीआईसीआर, कोयंबतूर को 30, अक्तूबर, 2012 को शहर कार्यालयीन भाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2011–12 के लिए विभिन्न सरकारी कार्यालयो के वर्ग मे प्रभावी हिन्दी कार्यान्वयन कार्य हेतु तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार हिन्दी प्रकोष्ठ संयोजक के द्वारा टीओएलआईसी के अर्ध वार्षिक के दौरान जिसका आयोजन बीएसएनएल, समुदाय भवन, कोयंबतूर में किया गया था में प्राप्त किया गया।

प्रकाशनों की सूची

बेहेरा एम. एम; महापात्रा पी. के; सिंगनधुपे आर. बी.; वर्मा ओ. पी. व कुमार ए. (2012). अश्वगंधा विधानिया सोमनीफेरा (एल) में उपज तथा अल्कलायेड की मात्रा पर ड्रिप द्वारा उर्वरता का प्रभाव. मेडिशिनल प्लांट – इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फाईटोमोडिसिन तथा रिलेटेड इंडस्ट्रीज. 4(3): 133–137. (एनएएएस स्कोर 3.6)।

• बेहेरा एम. एम; महापात्राा पी. के; सिंगनधुपे आर. बी.; वर्मा ओ. पी. व कुमार ए. (2013) स्टीविया (स्टीविया रीबाउडियाना) परड्रिप सिचाई के अंतर्गत उर्वरता का प्रभाव. इंडियन जर्नल ऑफ एग्रोनामी, 58(1) : 72–79, (मार्च, 2013) (एनएएएस स्कोर 5.0)।

• बेहेरा एम. एम; महापात्रा पी. के; सिंगनधुपे आर. बी.; वर्मा ओ. पी. व कुमार ए. (2012). अश्वगंधा (विथानिया सोमनीफेरा) की उपज, गुणवत्ता व आर्थिकी पर सिंचाई तथा उर्वरकता स्तरों का ड्रिप सिचाई प्रणाली के अंतर्गत प्रभाव। ज. एग्रोनामी 57(2) : 195–199 (नास स्कोर 5.0)।

• ब्रम्हानंद पी. एस; कुमार ए.; घोष एस.; राय चौधरी एस.; सिंगनधुपे आर. बी.; सिंह आर.; नंदा पी.; चक्रवर्ती एच. सी.;

• श्रीवास्तव एस. के. एवं बेहेरा एम. एस. (2013). भारत में खाद्य सुरक्षा के लिए चुनौतियाँ करेंट साईंस 107(4) : 841–845 (नास स्कोर 7.3)।

• पांडा डी. के.; कुमार ए.; सिंगनधुपे आर. बी.; साहू एन.(2012).जलवायु संवदेनशील उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रा में जल–जलवायु परिवर्तन. इंटरनेशनल जर्नल आफॅ क्लाईमेटोलाजी. (रायल मेट्रोलाजिकल सोसायटी, यू.के.). डीओआई : 1.1002 / जेओसी 3538 (नास स्कोर 7.7)।

• अमुधा जे.; बालसुब्रमणी जी. एवं मोंगा डी. (2012). कपास में पर्ण कुंचन विषाणु प्रतिरोधिता जीन से जुडे आण्विक चिह्नकें की पहचान वंशागति। काटन रिसर्च जर्नल 3(1) : 33–39 (नास रेटिंग 2.6)।

• अमुधा एम. एवं बानू जे. जी. (2012). मेटारिजीनियम एनासोप्लिये व वर्टी सीलियम लिकेनी का कीटनाशकों के साथ संगतता। एनलस् ऑफ प्लांट प्रोटेक्शन साईंसेस 20(2) : 354–357 (नास रेटिंग 37)।

• अमुधा एम एवं बानू जे. जी. (2011) कपास मिलेबग्स, फिनोकाकस सोलेनापसिस तथा पेराकाकस मार्जीनेटस के विभिन्न विकास अवस्थाओं मे एन्टोमोपेथोजीनिक फफूंद के प्रति संवेदनशीलता। इंडियन जर्नल प्लांट प्रोटेकशन 39(3) : 242–246 (नास रेटिंग : 4.3)।

• एंड्रयू एच. पेटरसन समूह (वी. एन. वाघमारे भी सम्मिलित) (2012) गॉसीपियम जीनोम की पुनरावृत्ति पॉलीप्लायडाईजेशन तथा बुनाई सक्षम कपास तंतु का विकास। नेचर, 492 (7429): 423 डी ओ आई : 10. 1038 / नेचर 11798।

बानू जे. जी. (2012). लिकेनीसीलियम लिकेनी के विकास तथा बीजाणुजनन पर पोषण का प्रभाव इन्सेक्ट इनविरानमेंट 17(3) : 117–119, (नास रेटिंग 219)।

प्रकाशित जनप्रिय लेख

1. गलकाटे, यू. वी. घरेलू मूर्गी पालन हेतु जिस प्रजाति का चयन किया जाए घरेलू मूर्गी पालन हेतु सुधारित देशी प्रजातियाँ। दैनिक एग्रोवन (मराठी) में प्रकाशित 22,जुलाई, 2012, पीपी 11

2. गलकाटे, यू. वी. वैज्ञानिक पध्दति के प्रयोग से दुग्ध उत्पादन में बढ़त। दैनिक एग्रोवन (मराठी) में प्रकाशित, 25, जुलाई, 2012 पीपी 12।

3. चव्हान सुनीता, कुबडे, रेणू एवं देशमुख रचना .षि क्षेत्रा में महिलाओं का सशक्तिकरण कैसे हो। .षक जगत साप्ताहिक। अगस्त, 2012 पीपी 09।

4. गुप्ता राम रतन चना लगाने के लिए सुधारित उपाय। बलीराजा, अक्तूबर, 2012 पीपी 88–91।

विस्तार पुस्तिका

गुप्ता राम रतन, नगरारे विश्लेष, तायडे ए. एस. एवं क्रांति के. आर. (2012)। कपास में मिलीबग का प्रकोप व इसका प्रबंधन (हिन्दी में) केवीके, सीआईसीआर, नागपुर द्वारा माह नवंबर, 2012 में प्रकाशित

रेडियों वार्ता

• डॉ. पी. वी. देऊलकर (फार्म प्रबंधक) द्वारा ''दुग्ध उत्पादन हेतु अच्छे किस्म के पशुओं का चयन'', विषय पर रेडियो वार्ता प्रस्तुत किया, एआईआर, नागपुर, 21, अगस्त, 2012।

• डॉ. यू. वी. गलकाटे, एसएमएस, केवीके ने हेलो अन्नदाता कार्यक्रम में मेरा घर मेरा मेरा खेत मालिका के अंतर्गत भाग लिया, 16 एवं 27 नवंबर, 2012। यह टेलीफोन पर कृषकों हेतु प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम था जिसका विषय था पशुधन उत्पादन।

• डॉ. पी. वी. देऊलकर (फार्म प्रबंधक) द्वारा ''अधिक दुग्ध उत्पादन वाले पशुओं में ज्वर'' विषय पर रेडियो वार्ता, एआईआर पर 7, दिसंबर, 2012 को प्रस्तुत की गई।

अंग्रेजी अंक संकलन एवं संपादनः डॉ. नंदिनी गोक्टे (प्रधान वैज्ञानिक)
प्रस्तुति एवं प्रकाशन डॉ. केशव क्रांति, निदेशक
हिन्दी संस्करण : निर्माण एवं संपादनः रजनी कान्त चतुर्वेदी
ग्रफिक सहयोगः संगिता औरंगाबादकर
केंन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान पोस्ट बैग क्र.. 2, शंकर नगर पोस्ट आफिस, नागपुर दूरभाष : 07103–275536 / 275538 फैक्स : 07103–275529